Edit with WPS Office

St. Lawrence High School

A JESUIT CHRISTIAN MINORITY INSTITUTION

Hindi Study Material (04)

Class- 11 पाठ - सूरदास के पद (भाग २)

Date: 30/06/2020

सारांश

वात्सल्य के पद

१) मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायो।
मो सों कहत मोल को लीन्हों तू जसुमति कब जायो॥
कहा करौं इहि रिस के मारें खेलन हौं नहिं जात।
पुनि पुनि कहत कौन है माता को है तेरो तात॥
गोरे नंद जसोदा गोरी तू कत स्यामल गात।
चुटकी दै दै ग्वाल नचावत हंसत सबै मुसुकात॥
तू मोहीं को मारन सीखी दाउहिं कबहुं न खीझै।
मोहन मुख रिस की ये बातैं जसुमति सुनि सुनि रीझै॥
सुनहु कान बलभद्र चबाई जनमत ही को धूत।
सूर स्याम मोहिं गोधन की सौं हौं माता तू पूत॥

प्रस्तुत पंक्तियों में सामान्य बच्चों की भावना को श्री कृष्ण के रूप में ढालते हुए सूरदास जी का कहना है कि गोकुल में श्री कृष्ण के बड़े भाई बलराम अपना बचपना को दर्शाते हुए सांवले रंग के होने के कारण अपने कनिष्ठ कृष्ण को चिढ़ाते हैं जिससे अन्य ग्वाल बाल भी आनंदित हो उठते हैं, क्रोधित बाल श्री कृष्ण माता यशोदा से इन सारे विषयों को लेकर शिकायत करते हैं।
वे कहते हैं मां बलराम दाऊ मुझे बहुत चिढ़ाते है। बलराम दाऊ मुझसे कहते हैं कि मैं खरीदा हुआ हूं। माता यशोदा ने मुझे जन्म ही दिया है। क्या करूं? मैं इस क्रोध के कारण खेलने भी नहीं जाता। वे बारंबार मुझसे कहते हैं कि तेरी माता कौन है और कौन है पिता? वे आगे भी कहकर मुझे और परेशान करते है कि नंद बाबा तो गोरे रंग के हैं और माता यशोदा भी गोरी है, फिर तेरा शरीर क्यों श्याम रंग का है? इससे ग्वाल बाल चुटकी बजा बजाकर नाचते हैं, हंसते है, मुस्कुराते हैं। अपनी क्रोधित हृदय से मैया पर वज्रपात करते हुए, उन पर दोषारोप करते हुए श्री कृष्ण कहते हैं कि तुम तो सिर्फ मुझे ही मारना सीखी हो, दाऊ पर तो कभी भी क्रोधित नहीं होती। मोहन के मुंह से ऐसी क्रोधित बातों को सुनकर मैया यशोदा मन ही मन प्रसन्न होती है। माता यशोदा अपनी अतिशय प्रेम से श्री कृष्ण को रिझाने की कोशिश करते हुए कहती है कि बलराम तो जन्म से ही चुगलखोर और धूत है। अपने बालक स्वरूप कृष्ण को विश्वास दिलाने हेतु कहती है मेरे लाल श्याम सुनो! में गोधन की कसम खाकर कहती हूं कि मैं तेरी माता और तू मेरा पुत्र है।

२) मैया! मैं नहिं माखन खायो।
ख्याल परै ये सखा सबै मिलि मेरैं मुख लपटायो॥
देखि तुही छींके पर भाजन ऊंचे धरि लटकायो।
हौं जु कहत नान्हें कर अपने मैं कैसें करि पायो॥
मुख दधि पोंछि बुद्धि इक कीन्हीं दोना पीठि दुरायो।
डारि सांटि मुसुकाइ जशोदा स्यामहिं कंठ लगायो॥
बाल बिनोद मोद मन मोह्यो भक्ति प्राप दिखायो।
सूरदास जसुमति को यह सुख सिव बिरंचि नहिं पायो॥

प्रस्तुत पंक्तियों में श्री कृष्ण अपनी बाल सुलभ नटखट स्वरूप को दर्शाते हैं। परसिनो के घर से माखन चोरी करने के पश्चात गोपीकाएँ उन्हें माता यशोदा के पास उनकी शिकायत करने हेतु ले जाती है, जहां माता के क्रोध से बचने के लिए कान्हा कहते हैं कि मैया मैंने माखन नहीं खाया है। यह शरारत तो ग्वाल बालों की है, जिन्होंने मिलकर मेरे मुंह पर माखन लिपटा दिया है। तू ही देख माखन का बर्तन तो उस छींके पर लटकाया हुआ है। मैं कहता हूं! अपने हाथों से मैं उसे कैसे प्राप्त कर सकता हूं? इतने में ही श्री कृष्ण को एक चालकी सूझी, वे तुरंत ही अपने मुंह पर लगे दही को पोंछकर दोने को अपने नन्हें से पीठ के पीछे छुपा लेते हैं। मोहन के बालसुलभ क्रियाकलाप एवं वाक्चतुरी को देखकर माता यशोदा अपने कान्हा को दंड देने हेतु अपने हाथ की छड़ी को फेंक कर मुस्कुरा देती है और प्रेम से परिपूर्ण हृदय से माता यशोदा अपने लाल को गले से लगा लेती है। इस प्रकार श्री कृष्ण ने अपनी बाललीला के मनमोहक सुख से माता यशोदा के ह्रदय को मुग्ध कर अपने भक्ति के प्रताप को दिखा दिया। सूरदास जी कहते हैं कि जिस अमृत सुख को माता यशोदा अपने निष्पाप भक्ति के कारण अनायास ही प्राप्त करते हैं उसी सुख को महादेव एवं ब्रह्मा प्राप्त करने में असमर्थता प्राप्त करते हैं।

Edit with WPS Office

<u>भ्रमरगीत</u>

१) ऊधौ मन नहिं हाथ हमारैं।
रथ चढ़ाइ हरि संग गए लै, मथुरा जबहिं सिधारे।।
नातरु कहा जोग हम छाँड़हि, अति रुचि कै तुम ल्याए।
हम तौ झँखतिं स्याम की करनी, मन लै जोग पठाए।।
अजहूँ मन अपनौ हम पावैं, तुम तैं होइ तौ होइ।
सूर सपथ हमैं कोटि तिहारी, कही करैंगी सोइ।।

प्रस्तुत पंक्तियों में उद्धव द्वारा लाए गए निराकार ब्रह्म की उपासना से गोपियों का हृदय अत्यंत पीड़ित हैं। श्री कृष्ण के विरह-वियोग में त्रस्त गोपियाँ उद्धव द्वारा लाए गए संदेश को मानने के लिए असमर्थ है।
वे कहती है उद्धव हमारा मन हमारे साथ नहीं है, जब श्री कृष्ण रथ चढ़कर वृंदावन छोड़कर मथुरा चले गए तब उन्हीं के साथ हमारा हृदय उनके साथ चला गया। विरह वियोग में जलती तपस्वी गोपियाँ हर क्षण अपने प्रियतम को पुनः प्राप्त करने के लिए प्रतीक्षित है। वह आगे कहती हैं अगर कृष्ण हमारे मन को साथ लेकर नहीं जाते तो कदापि हम भी उस योग को नहीं छोड़ती जो तुम इतनी रुचि से हमारे लिए लाए हो। हम गोपियाँ तो श्रीकृष्ण से अत्यंत दुखी है, वे तो हमारे मन को अपने साथ ले गए परंतु उसके बदले वे योग साधना को तुम्हारे हाथों भेज दिए। हमारे प्रेम को उन्होंने यही सिला दिया। अगर हमें हमारा हृदय प्राप्त हो जाए तब हम तुम्हारे द्वारा लाए गए रुचिपूर्ण साधना *(*योग साधना*)* को अवश्य स्वीकार कर लेंगे। हे उद्धव*!* यदि हमारा मन तुम्हारे पास है तो उसे तुम हमें लौटा दो।
अंत में गोपियों के शब्दों के माध्यम से सूरदास जी कहते हैं कि उद्धव हम तुम्हारी करोड़ों कसमें खाकर कहती है कि यदि तुम हमारा मन वापस कर दोगे तो तुम जो कहोगे हम सब वही करेंगे।

२) मधुबन तुम क्यौं रहत हरे।
बिरह बियोग स्याम सुंदर के ठाढ़े क्यौं न जरे।।
मोहन बेनु बनावत तुम तर, साखा टेकि खरे।
मोहे थावर अरु जड़ जंगम, मनि जन ध्यान टरे।।
वह चितवनि तू मन न धरत है, फिरि फिरि पुहुप धरे।
सूरदास प्रभु बिरह दवानल, नख सिख लौं न जरे।।

प्रस्तुत पंक्तियों में श्री कृष्ण के विरह वेदना में जलती हुई ग्वाल बालाओं का हृदय अत्यंत पीड़ित है। जिस प्रकृति, जिस मधुबन में श्रीकृष्ण अपनी लीलाओं का स्वांग रचते थे, वह मधुबन श्री कृष्ण के वियोग में भी समृद्ध हो रहा है जिससे गोपियाँ अत्यंत दुखी है एवं उसे धिक्करति है।
वे मधुबन से कहती है हे मधुबन*!* तुम कृष्ण के वियोग में भी किस प्रकार इतने हरे-भरे रह सकते हो*?* श्याम सुंदर के विरह वियोग की अग्नि में तुम खड़े- खड़े भस्म क्यों नहीं हो गए*?* तुम्हारी ही उस शीतलता प्रदान मादक छाया में तुम्हारे सहारे खड़े होकर मोहन बेनु बजाते थे। उनकी बांसुरी की उसी मधुर तान को सुनकर ही स्थिर रहने वाले अरु, जर- जंगम, सजीव- निर्जीव संपूर्ण प्रकृति अपनी चेतना खो बैठते थे। ब्रह्म ज्ञान को प्राप्त करने हेतु महान मुनि- ऋषियों के ध्यान भी भंग हो जाते थे। वे अपने ज्ञान सिद्धि की जगह मनमोहक बांसुरी का श्रवण कर आनंदित होते थे। इतना ही नहीं तुझे तो श्रीकृष्ण के मनहरण चितवन भी ज्ञात नहीं है, उसे भूल कर तो तू क्रमशः अपनी समृद्धि को बढ़ाने हेतु नए-नए फूल धारण कर रहा है। सूरदास गोपियों के माध्यम से मधुबन को धिक्कारते हुए कहते हैं कि प्रभु के विरह वियोग की अग्नि में वह *(*मधुबन*)* स्वयं ही क्यों नख से शिख तक जलकर राख नहीं हुआ। आशय यह है कि जिस प्रकृति में प्रभु कि इतनी लीलाओं का भरमार है वह प्रकृति उनके वियोग में विकसित हो रहा है, जबकि उसे इस वियोग की अग्नि में जलकर भस्म होना चाहिए था।

Teacher's Name - Riya Saha